माध्यमिक परीक्षा प्रणाली : समीक्षा एवं समुन्नयन

अभिमत (सुझाव)

महेन्द्र कपूर

संगठन मंत्री

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

दूरभाष : 011-22914799, 9868711893, 9414040403, 9414068780, 9414023964

E-mail:abrsmdelhi@gmail.com, abrsmdelhi@rediffmail.com, Website: **www.abrsm.in**

माध्यमिक परीक्षा प्रणाली : समीक्षा एवं समुन्नयन

माध्यमिक परीक्षा प्रणाली को प्राचीन काल से संदर्भित करने की आवश्यकता है। इसमें केवल मात्र स्मरण शक्ति व मानसिक योग्यता का ही मूल्यांकन नहीं होना चाहिये अपितु मूल्यांकन में शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का भी समावेश होना चाहिये। परीक्षा प्रणाली में केवल सूचनाओं का ही परीक्षण नहीं होना चाहिये अपितु संपूर्ण चरित्र की परीक्षा होनी चाहिये। हमें आज की परीक्षा -प्रणाली में उपनिषद् साहित्य से सीख लेनी चाहिये जिसमें प्रश्नों के माध्यम से जिज्ञासा उत्पन्न कर व्यक्ति में ज्ञान भरा जाता था तथा वह ज्ञान प्राचीन काल में आचरण में समाहित हो जाता था, अतएव व्यक्ति का उस समय सर्वाङ्गीण विकास होता था। मूल्यांकन में मूल्यांकनकर्ता शिक्षक का भी मूल्यांकन होना चाहिये क्योंकि मूल्यवान व्यक्तित्व ही मूल्यांकन करने में समर्थ हो सकता है।

वर्तमान में माध्यमिक परीक्षा में सुधार एवं समुन्नयन के लिये निम्नानुसार बिन्दुवार सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक परीक्षा एवं सत्रांक

यह सर्वविदित तथ्य है कि प्रायोगिक परीक्षाओं में कार्य एवं परिणाम में सकारात्मक सह सम्बन्ध नहीं है। विद्यालयों में प्रयोगशालायें पर्याप्त मात्रा में नहीं है और प्रायोगिक उपकरण भी न तो पर्याप्त मात्रा में हैं न ही वे उपयुक्त दशा में हैं। शिक्षकों द्वारा भी प्रायोगिक कार्य को अपेक्षित महत्त्व नहीं दिया जाता है। यह भी स्थिर तथ्य है कि प्रायोगिक परीक्षाओं में परीक्षार्थियों को उनके स्तर से अधिक अंक दिये जाते हैं, ऐसे भी बहुत उदाहरण सामने आ रहे है जिसमें विद्यालय में छात्रों से अधिक अंक दिलवाने के नाम पर राशि इकटठी की जाती है और बाह्य परीक्षक को उस एकत्र राशि में से राशि दी जाती है और शेष राशि विद्यालय में रख ली जाती है इस सम्पूर्ण स्थिति में सुधार को दृष्टिगत रखते हुये निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

1. सैद्धान्तिक परीक्षा के साथ ही प्रश्न-पत्र में प्रायोगिक परीक्षा से संबंधित प्रश्न भी सम्मिलित हों जिससे जिस विद्यार्थी ने प्रायोगिक कार्य उचित प्रकार से किया होगा वही उनके उत्तर दे सकेगा। इससे प्रायोगिक परीक्षा की विश्वसनीयता बढ़ेगी।
2. कोचिंग प्रवृत्ति के दुष्प्रभाव के कारण कुछ बालक स्कूल में प्रवेश तो लेते हैं लेकिन विद्यालय में आते नहीं इसलिये प्रायोगिक कार्य भी नहीं करते हैं अतः प्रशासन द्वारा समुचित निरीक्षण की व्यवस्था हो।
3. विद्यालयों में प्रायोगिक विषयों की सीटे संसाधनों के अनुरूप हों उसी अनुपात में प्रवेश दिया जावे तथा नियमित प्रायोगिक कक्षा पर बल दिया जावे।
4. विद्यालय में 20 बालकों के एक साथ प्रायोगिक परीक्षा की व्यवस्था हो तथा वहाँ सी.सी.टी.वी. कैमरे स्थापित हों जिससे प्रशासन प्रायोगिक कक्षाओं के स्तर एवं व्यवस्था की देखरेख कर सके। इससे प्रायोगिक परीक्षाओं में पारदर्शिता आयेगी व विश्वसनीयता बढ़ेगी।
5. बाह्य परीक्षक जो प्रायोगिक परीक्षाओं के लिये बुलाये जाते हैं उनका उस विद्यालय से जुड़ाव नहीं होता तथा न ही उनके उत्तम चरित्र का ज्ञान होता, अतः स्थानीय स्तर पर ऐसे बाह्य परीक्षक लगायें जिनका चरित्र उत्तम हो तथा समाज में ईमानदारी के लिये प्रतिष्ठित हों। इससे अनुचित प्रकार से अंक देने की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी।
6. प्रायोगिक परीक्षाओं के लिये नोडल स्तर पर सुसज्जित लैब बनाये जावें एवं ऐसे केन्द्रों पर समुचित देखरेख में परीक्षायें सम्पन्न हों।

सत्रांक

आज यह देखा जा रहा है कि सत्रांक के कारण दशमी कक्षा का परिणाम जो पहले 40 से 50 प्रतिशत रहता था वह बढ़ गया है किन्तु छात्रों का ज्ञान उस स्तर पर नहीं बढ़ा है। शिक्षक सत्रांक में 20 में से 19 अंक विद्यार्थी को दे रहा है

उसका कारण विद्यार्थी का उत्तम स्तर नहीं है अपितु शिक्षक को अपने परीक्षा परिणाम के कम रह जाने व प्रशासन द्वारा उस पर कार्यवाही होने का भय है। अत: 'कम परिणाम देने वाले शिक्षकों पर कार्यवाही होगी' इस बात से सत्रांक व्यवस्था दूषित हो रही है। इस व्यवस्था में सुधार हेतु बोर्ड द्वारा सैद्धान्तिक व सत्रांक में अलग-अलग अंक दिये जाने चाहिये। सत्रांक को 20 अंक से आगे बढ़ाया जाये लेकिन इसमें उचित रूप से बालक के व्यक्तित्व की परीक्षा हो। सत्रांकों की रेण्डम जाँच होनी चाहिये। सी.बी.एस.ई. से प्रतिस्पर्धा के लिये सत्रांक आवश्यक है किन्तु इनके उद्देश्य की पालना होनी चाहिये। सैद्धान्तिक परीक्षा व सत्रांकों के बीच तार-तम्य होना चाहिये व उचित मूल्यांकन के आधार पर वैद्य पद्धति से ही सत्रांक दिये जायें।

प्रश्न-पत्र निर्माण एवं उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन

आज की परीक्षा प्रणाली में प्रश्न पत्रों की कठिनता, जटिलता, उनका स्तरानुसार न होना तथा प्रश्न पत्र में निहित विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का औचित्य पूर्वक समावेश न होना, इसी प्रकार उत्तर पुस्तिकाओं के परीक्षक के घर भिजवाकर मूल्यांकन में प्राप्त त्रुटियाँ, केन्द्रीय मूल्यांकन पद्धति की त्रुटियों एवं इस विषय से सम्बद्ध विभिन्न समस्यायें दृष्टिगोचर होती है। इनके निराकरण के लिये निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

1. प्रश्न-पत्र परीक्षा का एक साधन है इसलिये वह ऐसा होना चाहिये जिससे सभी प्रकार के व्यक्तिगत विभिन्नता वाले बालकों की बौद्धिक उपलब्धियों की जाँच हो सके। इसमें साधारण एवं असाधारण प्रतिभाओं का सही मूल्यांकन करने की क्षमता होनी चाहिये।
2. सर्वप्रथम प्रश्न-पत्र की डिजाईन तैयार की जानी चाहिये, जिसमें यह निश्चित हो कि पाठ्यक्रम के किस भाग को कितना भार दिया जाना अपेक्षित है इसी के साथ ज्ञान, स्मरण एवं समझ इत्यादि के लिये भी अलग-अलग अंकभार दिया जाना चाहिये। भिन्न, भिन्न कौशलों की जाँच के लिये भी अंकभार निर्धारित हो।
3. प्रश्न-पत्र निर्माण से पहले ब्लूप्रिन्ट आवश्यक रूप से बनाना चाहिये जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के आधार पर कुल कितने प्रश्न होंगे, उसमें बहुविकल्पीय, अतिलघुत्तरात्मक, लघुत्तरात्मक तथा निबन्धात्मक प्रश्न कितने-कितने होंगे यह सभी निर्धारण होना चाहिये।
4. प्रश्न-पत्र में प्रश्न दुविधापूर्ण तथा द्विअर्थीय नहीं होने चाहिये, ब्लूप्रिन्ट के अनुसार कठिनता का स्तर हो, बहुविकल्प वाले प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर समानता लिये हुये न हो तथा विद्यार्थी भली भांति समझकर उत्तर दे सके ऐसे प्रश्न हो। प्रश्नों के द्वारा पाठ्यक्रम की विषयवस्तु प्रमाणित होनी चाहिये।
5. प्रश्न-पत्र निर्माण के पश्चात् उसका विशेषज्ञों द्वारा अनुसीमन (मोडराइजेशन) करवाया जावे जिससे उसकी सम्पूर्ण वास्तविकता व विश्वसनीयता सुनिश्चित हो।
6. प्रश्नों की उत्तरतालिका के उत्तर पाठ्यक्रम से प्रमाणित होने चाहिये।
7. बोर्ड द्वारा विषय विशेषज्ञ एवं परीक्षा विशेषज्ञों द्वारा प्रश्न-पत्र निर्माण तथा परीक्षा से सम्बन्धित सभी विषयों पर जैसे डिजाइन, ब्लूप्रिन्ट एवं प्रश्न-पत्र निर्माण इत्यादि पर उचित रूप से प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।
8. प्रश्न-पत्र निर्माता को यह सुस्पष्ट होना चाहिये कि मैं यह प्रश्न किस विधा को परखने करने के लिये बना रहा हूँ तथा विद्यार्थियों को इसका क्या उत्तर देना है।
9. हमें औसत से अधिक जटिल प्रश्न-पत्र निर्माण से बचना चाहिये। सरलीकरण के लिये विद्यार्थी के स्तर को ध्यान में रखना चाहिये जिससे उसके ज्ञान, बोध की समुचित परीक्षा हो सके। इसमें परीक्षक को अपनी विद्वत्ता एवं पारंगतता विद्यार्थी पर नहीं थोपनी चाहिये। औसत बुद्धि के ऊपर तथा कुछ औसत से बहुत ऊपर सभी के लिये प्रश्न बनें।
10. माध्यमिक स्तर पर विद्यालय में होम एसेसमेन्ट हो जाये तथा बोर्ड लेवल पर वस्तुनिष्ठ प्रश्न हों जिससे बोर्ड के परिणाम की विश्वसनीयता बनी रहे।

11. भाषागत विषयों में प्रश्न-पत्र में वस्तुनिष्ठ तथा निबन्धात्मक दोनों प्रकार के प्रश्नों का समावेश हो जिससे भाषागत शुद्धता एवं ज्ञान दोनों की जाँच संभव हो सके। निबन्धात्मक प्रश्न को भी विभिन्न भागों में विभक्त कर अंकों की व्यवस्था हो।
12. प्रश्न-पत्र निर्माण उत्तम हुआ है उतना ही उत्तरपुस्तिका मूल्यांकन भी उत्कृष्ट होना चाहिये अन्यथा परीक्षा का उद्देश्य समाप्त हो जाता है इसलिये प्रश्न की विषयवस्तु क्या है, क्या उत्तर अपेक्षित है, कितनी सीमा में अपेक्षित है, परीक्षार्थी ने इसकी कितनी पालना की है इन सभी बातों का ध्यान रखते हुये उत्तरपुस्तिका मूल्यांकन का कार्य करना चाहिये।
13. उत्तरपुस्तिका को परीक्षक के घर भिजवाकर मूल्यांकन करवाने की परम्परा के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों पहलू हैं। इसमें परीक्षक अपनी सुविधानुसार सरलता से मूल्यांकन कर पाता है लेकिन इसमें परीक्षक की व्यक्तिपरकता हावी रहती है। कुछ परीक्षक सख्त मूल्यांकन करते हैं। कुछ परीक्षक उदारता से मूल्यांकन करते हैं। परीक्षक घर पर अपने घर के सदस्यों का सहयोग भी ले लेता है जिससे परीक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है, घर पर जल्दी-जल्दी मूल्यांकन से भी गुणवत्ता प्रभावित होती है। अंकों के योग तथा उनकी प्रविष्टियों में गड्बड़ी की संभावना रहती है। परीक्षक को घर के लिये 250 से अधिक उत्तरपुस्तिकायें नहीं देनी चाहिये, इसके लिये पारिश्रमिक भी अधिक हो एवं समय भी अधिक दिया जाना चाहिये। एक पैकिट प्रत्येक परीक्षक को जाँचना अनिवार्य हो। घर पर किये हुये सम्पूर्ण परीक्षा कार्य की निगरानी अतिरिक्त मुख्य परीक्षक द्वारा होनी चाहिये।
14. केन्द्रीय मूल्यांकन पद्धति परिष्कृत पद्धति है। जिसमें सभी परीक्षक साथ बैठकर आपसी विचार-विमर्श से मूल्यांकन कार्य करते हैं इसमें व्यक्तिपरकता कम होती है। मुख्यपरीक्षक द्वारा मूल्यांकन सम्बन्धी प्रक्रिया एवं उत्तरतालिका के विषय में सम्पूर्ण जानकारी दी जाती है जिससे मूल्यांकन कार्य में समानता होती है, परीक्षक की एकाग्रता बनी रहती है, मूल्यांकन कार्य पर सम्पूर्ण नियंत्रण रहता है, समय की बचत होती है। इस प्रणाली में प्रत्येक बैच के साथ एक सुपरवाईजर होता है जो परीक्षक के अंकों एवं प्रविष्टियों की जाँच करता है। अत: त्रुटियों की संभावना कम रहती है। किन्तु इस पद्धति में पर्याप्त संख्या में परीक्षक नहीं मिल पाते। अत: परीक्षकों को अधिक उत्तर पुस्तिकायें देनी पड़ती हैं। जिससे मूल्यांकन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। यह पद्धति खर्चीली अधिक है, कुछ राज्यों में केवल एक ही प्रश्न का सभी उत्तरपुस्तिकाओं में एक परीक्षक से मूल्यांकन करवाया जाता है जिससे अंकों में विश्वसनीयता रहती है तथा परीक्षक की व्यक्तिपरकता कम रहती है इस प्रकार केन्द्रीय मूल्यांकन पद्धति को अधिक परीक्षक बढ़ाकर एवं अधिक वैज्ञानिक मूल्यांकन व्यवस्था को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। इस पद्धति को नोडल स्तर पर लागू करें तो शीघ्र भी मूल्यांकन होगा एवं उचित भी रहेगा। क्योंकि इसमें परीक्षक को अपने घर से आने-जाने की सुविधा रहती है। इसमें 25 उत्तर पुस्तिकायें दी जावें तथा समय से पूर्व परीक्षक जाये नहीं, यह व्यवस्था हो।
15. मुख्य परीक्षक के पास प्रारम्भ में 10 उत्तर पुस्तिकायें जाती हैं, उसे पूरी उत्तर पुस्तिकायें जाँच होने के बाद 10 उत्तर पुस्तिकायें और देखनी चाहिये।
16. बोर्ड द्वारा केवल वार्षिक परीक्षा का आयोजन हो एवं उसमें बहुविकल्पीय प्रश्न हों, लिखित प्रश्नों के द्वारा अर्धवार्षिक तक विद्यालय एवं नोड्ल स्तर पर जाँच की जावे। जब परीक्षक अपनी उत्तरपुस्तिकायें जाँच कर लोटा दे तो रैण्डम स्तर पर सैम्पल जाँच होनी चाहिये। जाँच में गलतियाँ पाई जाने पर कार्यवाही सुनिश्चित की जानी चाहिये।
17. ऑनलाईन उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन में उत्तर पुस्तिका को स्केन करके जाँचने की व्यवस्था होती है, इसमें पूर्ण पारदर्शिता होती है, परिवहन के खर्च की बचत होती है, उत्तर पुस्तिकायें सुरक्षित रहती है, समय की बचत होती है, परिणाम तुरन्त प्राप्त होता है एवं गोपनीयता बनी रहती है लेकिन इसके लिये संस्थागत ढ़ाँचे की वृद्धि तथा कम्प्यूटर की अत्यधिक व्यवस्था आवश्यक है। इस व्यवस्था में परीक्षक प्रशिक्षित होने चाहिये, तकनीकी विशेषज्ञों की निगरानी में यह कार्य हो एवं इसका निरन्तर परिष्कार हो।

परीक्षा प्रणाली एवं सहशैक्षिक गतिविधियाँ

आज की परीक्षा प्रणाली में अंकों की होड़ दुर्भाग्यपूर्ण है। अत: विद्यार्थी के सर्वाङ्गीण विकास के लिये आवश्यक सहशैक्षिक गतिविधियों के उत्तम सञ्चालन एवं मूल्यांकन हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

1. स्काउट, एन.सी.सी., खेल, निबन्ध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, क्विज इत्यादि प्रकल्प सहशैक्षिक गतिविधियों के रूप में चलते हैं जो कि विद्यार्थी के उन्नयन का आधार होते हैं अत: उनके विद्यालय में पूर्णरूपेण सम्पादित होने की व्यवस्था होनी चाहिये। इन प्रवृत्तियों से बालक की EQ और SQ का समुचित मापन होना चाहिये।
2. आज अभिभावकों में भी यह प्रवृत्ति हो गयी है कि बालक सहशैक्षिक गतिविधियों में भाग न ले, वे केवल अंक चाहते हैं जबकि बालक के सर्वांङ्गीण विकास का आधार सहशैक्षिक गतिविधियाँ ही हैं। अत: सरकारी स्तर पर एवं सामाजिक जागरुकता के स्तर पर सहशैक्षिक गतिविधियों को महत्त्व दिया जाना चाहिये।
3. सहशैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के लिये प्रत्येक प्रवृत्ति के 5 अंक निर्धारित होने चाहिये। बोर्ड की मार्कशीट में भी वे अंक जुड़ने चाहिये। हमें सत्रांक को 20 से बढ़ाकर 40 प्रतिशत कर देना चाहिये व उसी में सहशैक्षिक गतिविधियों का अंकभार सम्मिलित कर देना चाहिये चूंकि सहशैक्षिक गतिविधियों में छात्र का समय अधिक चला जाता है अत: वे चाहकर भी सैद्धान्तिक परीक्षा की अच्छी तैयारी नहीं कर पाते। इन प्रवृत्तियों में छात्र के प्रदर्शन के आधार पर विशेष अंक सैद्धान्तिक परीक्षा में देकर, उसकी कमी पूर्ति हो। सह शैक्षक गतिविधियों में प्राप्त अंकों के आधार पर सरकारी नौकरियों में ऐसे विद्यार्थियों को उचित महत्त्व दिया जाना चाहिये।
4. स्काउट व एन.सी.सी. में से एक प्रवृत्ति प्रत्येक बच्चे के लिये अनिवार्य होनी चाहिये, इससे बालक अनुशासन सीख पायेगा।
5. सहशैक्षिक गतिविधियों के सञ्चालन एवं उनके मूल्यांकन में अत्यधिक समय की आवश्यकता है लेकिन यह बहुत महत्त्वपूर्ण है अत: हमें सैद्धान्तिक विषयों गणित, विज्ञान, अंग्रेजी के पाठ्यक्रमों को कम करने की आवश्यकता है।
6. प्रत्येक बालक की व्यक्तिगत भिन्नतायें होती हैं कोई बालक सैद्धान्तिक में अच्छा होता है तो कोई सह शैक्षिक गतिविधियों में अच्छा होता है कोई खेल में अच्छा होता है तो कोई गाने में, इस प्रकार उस बालक को पहचान कर उसकी नैसर्गिक प्रवृत्ति के विकास एवं उसी प्रवृत्ति के मूल्यांकन की व्यवस्था हो, एवं मूल्यांकन के पश्चात् उस क्षेत्र में उसकी आजीविका का प्रबंधन होना चाहिये।
7. सहशैक्षिक गतिविधियों में केवल अच्छे प्रदर्शन एवं विजेताओं के आधार पर ही मूल्यांकन नहीं होना चाहिये अपितु उन गतिविधियों में बालक के सतत् निरीक्षण की व्यवस्था हो तथा उसके मूल्यों के विकास, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठता, सामाजिकता इत्यादि गुणों का भी मूल्यांकन होना चाहिये।
8. सम्पूर्ण शैक्षिक पर्यावरण में नैतिकता अत्यावश्यक गुण होना चाहिये। शिक्षक अपनी नैतिक जिम्मेदारी लेते हुये रुचि के साथ सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन एवं मूल्यांकन करे तथा छात्रों में इनमें भाग लेकर अपने सर्वाङ्गीण विकास करने की नैतिकता भरे एवं इनके महत्त्व को उनके व्यक्तित्व में आत्मसात करवाये।
9. विद्यालय प्रबंधन में सहशैक्षिक गतिविधियों को महत्त्व देकर उनके कालांशों की इस प्रकार व्यवस्था हो कि खेल के मैदान इत्यादि में आने-जाने का समय तथा बालक के विश्राम की व्यवस्था का समय भी दिया जावे जिससे इन गतिविधियों के बाद विद्यार्थी सैद्धान्तिक कक्षाओं में रुचि से अध्ययन कर सके। विद्यालय पंचांग तथा परीक्षा प्रणाली में सहशैक्षिक गतिविधियों के आयोजन तथा मूल्यांकन की समुचित रूपरेखा दी जानी चाहिये व उसके अनुसार उचित निरीक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये।
10. हमने सी.बी.एस.ई. के पाठ्यक्रम को ही फोलो किया है परीक्षा प्रणाली को नहीं, वहाँ 70 प्रतिशत विद्यालय स्तर पर है तथा बोर्ड स्तर पर 30 प्रतिशत ही है जबकि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में विद्यालय स्तर पर 20 प्रतिशत है तथा बोर्ड स्तर पर 80 प्रतिशत है। इससे बालक के सर्वाङ्गीण विकास का मूल्यांकन नहीं हो पाता। अत: यह अनुपात 50 + 50

प्रतिशत का हो जाना चाहिये क्योंकि शिक्षक वर्ष भर विद्यार्थी के साथ रहता है वह उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन कर सकता है। परन्तु यह उचित निगरानी में होना चाहिये जिससे विश्वसनीयता बनी रहे।

11. सहशैक्षिक गतिविधियों के आयोजन एवं मूल्यांकन का उचित डाक्यूमेन्टेशन होना चाहिये जिससे बालक एवं अभिभावकों को इसका महत्त्व ज्ञात रहे। इनके आधार पर छात्रों में विकसित हो रहे गुणों को पत्रक में भरना चाहिये जो आगे उनकी प्रगति का आधार बने।
12. सैद्धान्तिक परीक्षाओं एवं सह शैक्षिक गतिविधियों का इस प्रकार का समन्वय होना चाहिये की विद्यार्थी में वास्तविक योग्यता विकसित हो, ऐसा नही हो कि सहशैक्षिक गतिविधियों में मूल्यांकन के अवास्तविक अंकों के आधार पर बालक उच्च शिक्षा में प्रवेश ले ले व बाद में वह कुंठा का शिकार हो। अत: इसमें अत्यन्त जागरूकता के साथ योजना बनाने व क्रियान्वयन की आवश्यकता है।
13. हमें सहशैक्षिक गतिविधियों के आयोजन एवं मूल्यांकन के लिये अध्यापकों में प्रबल इच्छाशक्ति व नैतिकता भरने की आवश्यकता है। इन प्रवृत्तियों के लिये अध्यापकों का उचित प्रशिक्षण व ओरियन्टेशन भी होने चाहिये।

परीक्षा के मनोवैज्ञानिक पक्ष

आज की परीक्षा प्रणाली में परीक्षाओं के समय घर के पर्यावरण में व छात्र के मानस में अत्यधिक तनाव रहता है। छात्र इस प्रकार सोचने लगता है कि ऐसा कुछ होने जा रहा है जो अब तक नहीं हुआ, इस प्रकार वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। उसकी सांसे तेज चलने लगती हैं, यह लम्बे समय तक चलता है तो स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, चिड़चिड़ापन हावी हो जाता है, परीक्षा का यह तनाव प्रत्येक विद्यार्थी को एक जैसा नहीं होता कुछ विद्यार्थी अत्यन्त संवेदनशील होते हैं अत: तनाव के स्तर को बढ़ा लेते हैं, कुछ तनाव तो करते हैं पर उसे नियन्त्रित भी रख लेते हैं। सामाजिक परिवेश से भी परीक्षाओं में विद्यार्थी का तनाव बढ़ता और घटता है इस प्रकार के परीक्षा के हव्वे व भय से विद्यार्थी की निष्पत्ति घट जाती है, अत: क्या विद्यार्थी का अंक प्राप्त करना ही सर्वस्व है? इसके लिये हमारी शिक्षा व्यवस्था व समाज दोनों जिम्मेदार हैं शिक्षा का उद्देश्य यह नहीं है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली में व्याप्त इन मनोवैज्ञानिक समस्याओं के निराकरण हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

1. परीक्षा के इस भयजनित तनाव को दूर करने हेतु परीक्षा कार्यक्रम में पहले-पहले दिन अंग्रेजी की जगह हिन्दी का प्रश्न-पत्र रखना चाहिये तथा विज्ञान एवं गणित से पहले एक-एक दिन का अन्तराल देना चाहिये।
2. हमारे यहाँ प्रारम्भिक कक्षाओं में किसी को अनुत्तीर्ण करने का नियम नहीं है अत: प्रारम्भ में बालक के 90 प्रतिशत तक अंक आते हैं लेकिन कक्षा 11, 12 में एक साथ उसका रेंक गिरता है अत: तनाव बढ़ जाता है। इसलिये हमें प्रारम्भिक से ही बालक में वास्तविक अध्ययन से वास्तविक परिणाम की आदत विकसित करनी चाहिये।
3. परीक्षा के भूत को समाप्त करने के लिये प्री बोर्ड एवं टेस्टों के द्वारा बच्चे को सामान्य कर देना चाहिये व उसको नियमित परीक्षा देने की आदत हो जानी चाहिये इससे भय के बार-बार सामने आने से बालक का भय समाप्त हो जाता है। इस प्रकार से प्रत्येक यूनिट के टेस्ट की व्यवस्था हो और सप्ताह में चार बार टैस्ट हो व उनके अंक अंकतालिका में जुड़े जिससे बालक का अधिकांश पाठ्यक्रम छोटी-छोटी परीक्षाओं में ही मूल्यांकित हो जावे व अन्त में कुछ अधिक अंकों की बिना बोझ वाली वार्षिक परीक्षा हो, तो बच्चा खुशी से परीक्षा दे पायेगा।
4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मैरिट प्राप्त छात्रों के नाम प्रसारित करने से भी बच्चों में तुलनात्मक भाव उत्पन्न होने से तनाव बढ़ता है अत: बोर्ड द्वारा मैरिट का प्रसारण नहीं होना चाहिये।
5. समाज में हर स्तर पर तनाव व्याप्त है विद्यार्थी में तनाव है, विद्यार्थी के अभिभावक में तनाव है, शिक्षक में तनाव है, व्यक्ति सड़क पर चल रहा है उसमें भी तनाव है, अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों में तनाव है, इसलिये पूरे परिवेश में ही तनाव है यदि शिक्षक तनाव में है तो विद्यार्थी में तनाव कैसे नहीं होगा। इसलिये विद्यालय में व्यायाम, कला, योग

इत्यादि प्रवृत्तियों के द्वारा पूरे पर्यावरण को तनाव रहित रखना चाहिये, घर में बालक की माता-पिता तुलना न करें व खुशी का पर्यावरण रखें। परिवार में अध्यात्म भावना भी हो जिससे बालकों में आस्थावान बनकर फल भगवान पर छोड़ने की प्रवृत्ति पनपे। विद्यार्थी के मन को मर्यादित करके सकारात्मक चिन्तन विकसित करने के लिये प्रत्येक स्तर पर उसके साथ उचित एवं मनोवैज्ञानिक व्यवहार किया जाना चाहिये।

6. विद्यालय में प्रार्थना सभा से ही सकारात्मक सोच विकसित करने की प्रेरणायें दी जाये, क्लास टैस्ट, प्री-बोर्ड, वार्षिक परीक्षायें इनमें सबमें बिना तुलना के बच्चे की सामर्थ्य के अनुसार उसे पहचान कर शिक्षक उसे प्रेम दे व भयमुक्त रहकर परीक्षा देने को प्रेरित करे।
7. यह अत्यन्त आवश्यक है कि परीक्षाओं में अंकों का महत्त्व कम किया जावे। अत: जो छात्र सैद्धान्तिक परीक्षाओं में कम अंक लाते हैं तो उनकी अभिरुचि को पहचान कर उन्हें सहशैक्षिक गतिविधियों में प्रेरित कर उनका मूल्यांकन करना चाहिये। इन गतिविधियों में छात्र जब उत्तीर्ण होगा तो उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा। अत: शिक्षा के 'सर्वाङ्गीण विकास' के उद्देश्य को ध्यान में रखकर विद्यार्थी की व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार उसे प्रेरित किया जावेगा तो वह भय और तनावमुक्त होकर परीक्षा दे पायेगा।
8. बालक के कम अंक आने पर अथवा अनुत्तीर्ण होने पर उसे तिरस्कृत नहीं करके उसके मानस को परखना चाहिये, उसके पर्यावरण को अनुभव करना चाहिये व तदनुरूप उसके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार, अध्ययन व परीक्षा की व्यवस्था करनी चाहिये।
9. तकनीकी दृष्टि से भी कभी-कभी विद्यार्थियों को तनाव का सामना करना पड़ता है जैसे कम्प्यूटर में अंक नहीं चढ़ पाना, उत्तरपुस्तिका में परीक्षक के द्वारा सही प्रविष्टियाँ नहीं होना, ऐसी स्थितियों में विद्यार्थी तुरन्त तनाव में आ जाते हैं। अत: इन व्यवस्थाओं में सुधार हो एवं अध्यापक व माता-पिता परिणाम आते ही विद्यार्थी को तुरन्त प्रतिक्रिया न दे थोड़ा जागरूकता से पता करे कि कम्प्यूटर या अन्य तकनीकी गल्ती से तो परिणाम खराब नहीं आया। विद्यालय स्तर पर भी अनुत्तीर्ण बालकों को प्रेम व विश्वास में लेकर संभालने वाले शिक्षक होने चाहिये।

सतत् एवं समग्र मूल्यांकन

शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है और उसका उद्देश्य बालक का समग्र विकास करना है, अत: उसका मूल्यांकन भी सतत् एवं समग्र होना चाहिये। प्राचीन काल में विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर अध्ययन करता था अत: उसका मूल्यांकन गुरु के द्वारा सतत्, समग्र एवं सहज रूप में किया जाता था। विद्यार्थी गुरु के सतत्, सीधे एवं व्यक्तिगत सम्पर्क में रहता था। आज की परिस्थितियों में शिक्षा केवल नौकरी के लिये प्राप्त की जा रही है। अत: विद्यार्थी किसी भी प्रकार से अधिक सूचनायें इकटठी कर अधिक अंक प्राप्त कर नौकरी में घुसना चाहता है। इसलिये हमारी परीक्षा प्रणाली में बालक के समग्र व्यक्तित्व के निर्माण के लिये केवल सैद्धान्तिक अंक प्राप्त करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा न देकर विद्यार्थी में रचनात्मक एवं नैतिक प्रवृत्तियों को बढ़ाना चाहिये। विद्यार्थी को निरन्तर व्यक्तिगत सम्पर्क में रखकर उसका सतत् एवं समग्र मूल्यांकन करना चाहिये। इसके लिये उसके समय को शिक्षक सामीप्य के लिये बढ़ाया जा सकता है, विद्यालयों को आवासीय किया जा सकता है, किन्तु व्यक्तित्व निर्माण के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है। परीक्षा प्रणाली में सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति को बढ़ावा देने हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

1. विद्यार्थी की IQ (बुद्धिलब्धि) EQ (संवेगात्मकलब्धि) SQ (आध्यात्मिकलब्धि) के विकास का पाठ्यक्रम एवं उसके समग्र एवं सतत् मूल्यांकन की व्यवस्था हो। अधिकाधिक रूप से सहशैक्षिक गतिविधियों का सञ्चालन हो एवं उसके मूल्यांकन के आधार पर बालक के व्यक्तित्व का निर्माण हो।
2. आज की परिस्थितियों में विद्यार्थियों के सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के लिये योग्य शिक्षकों द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी का पत्रक बनाकर उसके गुण और अवगुणों को उसमें अंकन किया जाना चाहिये। अंकन के पश्चात् अवगुणों का मनोवैज्ञानिक

ढ़ंग से निराकरण किया जाना चाहिये। बालक के व्यवहारगत परिवर्तन का भी अंकन हो। इसके लिये एक आन्तरिक मूल्यांकन प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया जावे जिससे बालक को सकारात्मक दृष्टिकोण मिले।

3. आज की नीतियां जो सतत् एवं समग्र मूल्यांकन में बाधक है उन्हें हटाया जाये जैसे प्राथमिक कक्षाओं में बालक को अनुत्तीर्ण न करने की नीति, शिक्षक पर कम परिणाम देने पर कार्यवाही की नीति, अनावश्यक रूप से बार-बार स्थानान्तरण की नीति, शिक्षक को शिक्षणेत्तर कार्यों में लगाने की नीति। इस प्रकार की नीतियों से बालक का सतत् एवं समग्र मूल्यांकन संभव नहीं हो पाता। अतः इन्हें दूर करना चाहिये।
4. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन हेतु शिक्षक का चरित्र नैतिक रूप से उच्च आदर्श वाला हो, विद्यार्थियों के अनुपात में शिक्षक नियुक्त हों, विद्यालय में विद्यार्थियों के बैठने एवं सहशैक्षिक गतिविधियों के सञ्चालन के पूर्ण संसाधन हों। इस प्रकार के मूल्यांकन के लिये सम्पूर्ण समय विद्यार्थी शिक्षक के समक्ष होना चाहिये अतः आज की परिस्थितियों के अनुरूप आवासीय विद्यालय हों तथा उनमें समर्पित शिक्षकों की नियुक्ति हो तभी सार्थक सतत् एवं समग्र मूल्यांकन संभव है।
5. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के विषय में जागरूक रहने की आवश्यकता है कि कहीं वह औपचारिक न बन जायें इसलिये डाक्यूमेन्टेशन हो किन्तु शिक्षक को स्वतन्त्रता होनी चाहिये कि वह धीरे-धीरे बच्चे को परखकर पत्रक को भरे एवं तदनन्तर विद्यार्थी को प्रेरित करे।
6. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन में बालक के आदर्श व्यवहार, उसकी उत्कृष्ट अभिरुचियाँ, भारतीय संस्कृति का ज्ञान एवं व्यवहार, आधुनिक ज्ञान विज्ञान का औचित्यपरक समावेश, सकारात्मक मनोविनोद, नेतृत्व सामर्थ्य, पर दुःख संवेदनशीलता, सृजनात्मकता इत्यादि सभी बातों के समावेश की व्यवस्था होनी चाहिये। अन्तर्निहित योग्यताओं के विकास का, आत्मबल के विकास का, शरीर, बुद्धि, मन, आत्मा के विकास का एवं तार्किक शक्ति के विकास का सतत् एवं समग्र मूल्यांकन में समावेश हो।
7. जिस प्रकार किसान भूमि को बीज बोने से पहले तैयार करते हैं फिर बीज बोते हैं, उगने से लेकर काटने तक उसके बाद खलिहान में तत्पश्चात् अन्न लाने के बाद घर में भी उसकी देखरेख करते हैं। उसी प्रकार शिक्षक सतत् रूप से विद्यार्थी पर निगरानी रखें, उसका मूल्यांकन करे एवं उसमें सद्गुणों का विकास करे।
8. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के लिये अवलोकन, मौखिक परीक्षा, प्रायोगिक परीक्षा एवं लिखित परीक्षा सभी विधियों का सहारा लेना चाहिये।
9. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन हेतु शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण देना अनिवार्य है। पहले शिक्षकों में यह भावना भरनी चाहिये कि यह कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसके लिये शिक्षक का कुशल, नैतिक एवं विशेषज्ञ होना आवश्यक है।
10. प्रशासनिक रूप से सतत् एवं समग्र मूल्यांकन को राष्ट्रहित में आवश्यक मानते हुये उसके सकारात्मक निरीक्षण की व्यवस्था प्रचलित हो, ऐसे शिक्षक जो अपना पूरा समय विद्यार्थियों के लिये समर्पित करते हों उनके योग क्षेम की सम्पूर्ण व्यवस्था प्रशासन करे एवं इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करे।

❑❑❑